RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-12
December -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

हिन्दी साहित्य की काव्यात्मक सृष्टि में गीतिनाट्य परम्परा

डॉ0 अशोक कुमार

उच्च माध्यमिक शिक्षक

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 December 2018

Keywords
विशिष्ट, प्रवृति, अभिनय

ABSTRACT

भारतीय वाड़मय में गीति–नाट्यों का सदैव एक विशिष्ट स्थान रहा है तथा इसकी परम्परा अति प्राचीन है। गीतिनाट्य नाट्य साहित्य की काव्यात्मक सृष्टि है। भारतीय काव्य सिद्धान्तों में नाटकों को 'पंचम वेद' के नाम से पुकारा गया है। 'नाट्योपंचमवेदः' कहकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि नाटक के सभी प्रमुख अंग वेद से ही गृहीत हैं। इसे कभी काव्य नाटक, काव्य रूप तो कभी दृश्य काव्य कहा गया। दृश्य काव्य होने के कारण यह पाठ्य और अभिनय दोनो है। यह सर्वविदित है कि अभिनय मानव की आदिम प्रवृति है। भारतीय संस्कृति और लोक परम्परा में तीन प्रवृतियाँ विशेष रूप से दिखायी देती है वे हैं– गीत, संगीत और अभिनय। गीति–नाट्यों में ये तीनो प्रवृतियाँ स्पष्ट रूप से मौजूद है।

शोध–आलेख की महत्ता, उद्वेश्य और सामग्री संकलन :

इस शोध–आलेख में हिन्दी गीति–नाट्यों के अध्ययन के लिए रचनाकारों की नाट्यकृतियों को अध्ययन का आधार बनाया गया है। जिसमें मुख्य रूप से सियाराम शरण की कृति 'कृष्णा' और 'उन्मुक्त', डॉ0 चन्द्रशेखर के पद्य नाटक 'शिव धनुष' और 'रोशनी के सेतु स्तम्भ', कुमार प्रशान्त के 'जटायु', महाभारत के विभिन्न आख्यानों से प्रेरित हिन्दी के पद्य नाटकों के बीच डॉ0 विनय की रचना 'एक प्रश्न मृत्यु' और दिनकर की 'उर्वशी' हैं। अध्ययन से संबंधित महत्वपूर्ण सामग्रियों का संकलन साहित्य के विभिन्न शोध–ग्रंथों एवं पत्र–पत्रिकाओं से किया गया है। प्रस्तुत शोध–आलेख हिन्दी साहित्य में गीतिनाट्य परम्परा का विवेचन करता है।

विश्लेषण :

हिन्दी गीत नाट्य को कई नामों से अभिहित किया जाता रहा है। कुछ विद्वान इसे पद्य नाटक कहते हैं तो कुछ विद्वान भाव–नाट्य कहते हैं। लेकिन ये दोनो नाम उपयुक्त नहीं लगते। इनकी जगह गीत–नाट्य ना ही अधिक उचित लगता है। इसलिए इसी शब्द का हिन्दी में प्रचलन भी है। कुछ विद्वान इसे नाट्य काव्य की संज्ञा भी देते है। लेकिन यह शब्द वस्तुतः दृश्य–काव्य का बोध कराता है। वस्तुतः काव्य–नाटक कविता में नहीं लिखा जाता, पद्य में लिखा जाता है। पद्य में लिखी कहानी पद्य कथ कहलाती है और पद्य में लिखे नाटक को पद्य नाटक कहना चाहिए। इसके लिए अंग्रेजी में Poetic Drama और Verse Drama जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। इसलिए काव्य नाटक शब्द गीत–नाट्य का समुचित और सार्थक बोध कराने में सक्षम नहीं है। कहा जा सकता है कि पद्य नाटक बिना भूमिका का नाटक है। अनावश्यक तत्वों से मुक्ति का नाटक है। समय की बचत का नाटक है। यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय विद्वानों ने रूपक के लिए अभिनय को अनिवार्य माना है। अभिनय का प्रथम रूप लोक–प्रचलित स्थानों में मिलता है। ये स्वांग की काव्यनाटकों में विभन्न रूपों में (लीला, तमाशा, अभिनय) प्रचलित रहे हैं। यह भी उल्लेख्य है कि कल्पना आश्रित नाटकों का एक वर्ग भाव–प्रधान नाटकों का है। जिन्हें शैली की दृष्टि से सामान्यतः गीतिनाटक नाम दिया गया है। इस वर्ग के नाटकों के लिए भाव–प्रमुखता के साथ–साथ पद्य का माध्यम भी अपेक्षित माना गया है।

भारतीय काव्य साहित्य का आदि रूप हमें संस्कृत साहित्य में मिलता है। पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर ने संकेत किया है कि काव्य नाटकों की उत्पत्ति ऋगवेद के विभिन्न संवाद–सूक्तों से हुई है। इनमें दन्द्र–मारूत संवाद, पुरूरवा–उर्वशी संवाद, इन्द्राणि–वृष–कपि संवाद और अगस्त्यलोपामुद्रा संवाद विशेष रूप से उल्लेख्य है।

गीतिनाट्य नाट्य साहित्य की काव्यात्मक सृष्टि है। भारतीय काव्य सिद्धान्तों में नाटकों को 'पंचम वेद' के नाम से पुकारा गया है। 'नाट्योपंचमवेदः' कहकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि नाटक के सभी प्रमुख अंग वेद से ही गृहीत हैं। आ0 भरतमुनि ने एक श्लोक में अपने 'नाट्यशास्त्र' में लिखा है, जिसका सारांश यह है कि ऋगवेद से नाटक की पटुता, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस ग्रहण किया गया है। यह स्मरण योग्य है कि संस्कृत साहित्य में काव्यनाटक या गीतिनाट्य प्रचलित रूप से प्राप्त है। संस्कृत साहित्य के दो महान ग्रंथ रामायण और महाभारत हमारे सामने है। वस्तुतः ये दोनो आख्यान काव्य है पर दृश्य–काव्य के तत्व भी उनमें बीज रूप में मौजूद हैं। जब हम संस्कृत साहित्य के विकास का अध्ययन करते हैं तब हमें स्पष्ट रूप से यह दिखता है कि उसका प्रमुख भाग नाट्य साहित्य से संबद्ध है। संस्कृत के प्रथम नाटककार भाष्य माने जाते हैं। जो ईसा पूर्व तीसरी और चौथी शताब्दी में परिगणित होते हैं। कतिपय इतिहासकार भाष्य से पूर्व अश्वघोष कृत 'सारिपुत्र' और कर्णपुर कृत 'चैतन्य–चंद्रोदय' का भी उल्लेख करते हैं। भाष्य के अनन्तर संस्कृत साहित्य में कालिदास ने अपने जिस महत्वपूर्ण दृश्य काव्यों की रचना की है, उनमें 'मालविग्निमित्रम्', विक्रमोंवशीयम् और अभिज्ञान शाकुन्तलम् अन्यतम हैं। महाभारत के आदिपर्व के 68वें से 74वें अध्याय में वर्णित शकुन्तला की कथा के आधार पर इसकी रचना हुई है। प्रसिद्ध पाश्चात्य इतिहासकार और कवि गेटे ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए लिखा है– ''यदि

तरूण वासंती पुष्प और ग्रीष्म प्रौढ़ परिणत फल अंत कृति को तृप्त करने वाली अमृत सदृश तरल वस्तु और स्वर्गीय सुषमा की एकत्र स्थिति देखनी है तो अभिज्ञान शकुन्तलम का परिदर्शन ही पर्याप्त है।'' अद्भुत व्यंजना शक्ति से भरपूर संस्कृति का – यह काव्यनाटक भारतीय काव्य इतिहास की सर्वोत्तम उपलब्धि है। कालक्रम में संस्कृत साहित्य में अनेक दृश्यकाव्य या गीतिनाट्य लिखे गए हैं। इनमें भवभूति का उत्तररामचरित, जयदेव का 'प्रसन्नराघव', शक्ति भट्ट का 'आश्चर्य–चूड़ामणि' दमोदर मिश्र का 'हनुमन्नाटक' विशेष उल्लेखनीय और प्रशंसनीय है।

सियाराम शरण गुप्त ने दो पद्य नाटकों की रचना की है– 'कृष्णा' (1921) और 'उन्मुक्त' (1930)। 'कृष्णा'– एक लघु नाटक है, जिसमें राष्ट्र कल्याण के लिए आत्म बलिदान का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। अपने समय की दृष्टि से 'कृष्णा' एक उत्कृष्ट पद्य नाटक है। 'उन्मुक्त' गाँधीवादी आदर्शों से प्रेरित रचना है, जिसमें युद्ध और शान्ति की समस्या पर विचार किया गया है। कवि ने एक काल्पनिक एवं प्रतीकात्मक कहानी गढ़ी है। 'उन्मुक्त' बहुत बाद की रचना है और जिस पद्धति का इसमें उपयोग हुआ है, उसे मैथिलीशरण गुप्त लिखित 'अनत्ध' (1925) में पहले ही देखा जा सकता है। इसमें गाँधीवादी आदर्शों को प्रस्तुत करने के लिए संवादात्मक खण्ड काव्य के स्वरूप का सहारा लिया गया है। पूरी कथा सत्रह खण्डो में विभाजित है, जिन्हें स्थानानुसार अरणय, चौपाल, उद्यान और कारागार आदि कहा गया है। आनन्दी प्रसाद लिखित 'झाँकी' (1925) में कवि के चार लघु पद्य नाटक संकलित हैं– पार्वती और सीता, शिवाजी और भारत राजलक्ष्मी, नूरजहाँ, चाणक्य और चन्द्रगुप्त सभी रचनाएँ अतुकान्त सममात्रित छन्दों में है। हरिकृष्ण प्रेमी का 'स्वर्ण विहान' (1930) गुप्तजी के 'अनध' की पद्धति पर ही लिखा गया। प्रेमी ने एक कल्पित कथानक के माध्यम से दिखलाया है कि किस प्रकार अहिंसात्मक आन्दोलन एवं असहयोग के द्वारा जनता अत्याचारी निरंकुश शासन का अन्त करती है। काव्य नाटक के प्रसंग में निराला के 'पंचवटी' (1930) की चर्चा की जाती है जो 'परिमल' में संकलित है। राम कथा के सूर्पनखा प्रसंग के आधार बनाकर लिखी गई यह रचना संवादों में है और पाँच दृश्यों में विभक्त है। मंगल प्रसाद विश्वकर्मा ने सात लघु नाटकों की रचना की है, जो उनकी पुस्तक 'रेणुका' (1970) में संकलित है उत्तरा और अभिमन्यु, श्री कृष्ण और सुदामा, लौंगी, देवदासी, चित्रलेखा, राधा और शाहजहाँ। ये नाटक सूचित करते हैं कि हिन्दी पद्य नाटक किस प्रकार मात्र इतिवृत्तात्मकता से मुक्त होकर भावात्मक अभिव्यक्ति की दिशा में गतिशील हो रहा था।

डॉ0 चन्द्रशेखर के पद्य नाटक 'शिव धनुष' (1981) में राम–विवाह से लेकर राम–रावण युद्ध तक के परिवेश का स्पर्श किया गया है और इस बहाने पौराणिक प्रसंगों का आधुनिक सन्दर्भ प्रस्तुत किया गया है। ''पारसनाथ गोवर्धन के पद्य नाटक 'दंशित आस्थाएँ' (1985) रामकथा के परम्परागत वृत्त को तोड़कर नये सामाजिक मूल्यों का साक्षात्कार कराने वाला नाटक बन गया है। डॉ0 चन्द्रशेखर ने 'रोशनी के सेतु स्तम्भ' (1985) में महर्षि अगस्त्य से सम्बद्ध पौराणिक मिथक को आधार बनाकर अंधकार और प्रकाश के संघर्ष को कलात्मक गरिमा के साथ उभारा है। महाभारत के विभिन्न आख्यानों से प्रेरित हिन्दी के पद्य नाटकों के बीच डॉ0 विनय की रचना 'एक प्रश्न मृत्यु' (1986) का अलग स्थान है। कुन्ती, द्रोपदी, युधिष्ठर और कर्ण के अर्न्तद्वन्द्व कको डॉ0 विनय ने इस पद्य नाटक में सफल अभिव्यक्ति दी है। कुमार प्रशान्त के 'जटायु' (1987) में रामकथा के एक सेसे पराजित पात्र का चयन पद्य नाटक के लिए किया गया है जो अन्याय से जूझता हुआ समाप्त होता है।

दिनकर की 'उर्वशी' की चर्चा न की जाये तो यह प्रसंग अधूरा रह जायेगा। 'उर्वशी' आधुनिक युग की सबसे सफल गीतिनाट्य रचना है। यह पौराणिक घटनाओं पर आधारित स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी और धरती के राजा पुरूरवा की प्रेमकथा से सम्बद्ध है। इस बहुचर्चित और क्ष्यातिलब्ध गीतिनाट्य ने दिनकर जी ने उर्वशी और पुरूरवा की प्राचीन कथा को नया से सम्बद्ध करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। उर्वशी स्वर्गलोक से उतरी हुई नारी है और पुरूरवा धतीपुत्र है। कवि के शब्दों में पुरूरवा के भीतर देवत्व की तृषा है, इसलिए मर्त्यलोक के नाना सुखों में वह व्याकुल और विषण्ण है। उर्वशी देवलोक से उतरी हुई नारी है। वह सहज निश्चित भाव से पृथ्वी का सुख भोगना चाहती है। उर्वशी गीतिनाट्य प्रेम और सौन्दर्य का काव्य है। उर्वशी में प्रमाभिव्यक्ति के लिए जिन बिम्बों और प्रतीकों का सहारा लिया गया है वे कहीं तो बड़े पारम्परिक ढ़ंग के हैं तो कही नई कवित के बिंबों के सादृश्य तरों और एकदम ताजे। उर्वशी की भाषा भी अलंकृत और अभिजात्य की चमक लेकर आयी है। संवाद शैली में प्रस्तुत यह गीतिनाट्य आधुनिक युग की गीतिनाट्यों में अति महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष :

हिन्दी पद्य नाटक का सर्वेक्षण सूचित करता है कि कई महत्वपूर्ण रचनाओं के बावजूद वह हिन्दी नाटक की मुख्यधारा नहीं बन सका है। कुछ नाटकों को प्रसारण अथवा प्रदर्शन की दृष्टि से सफलता भी मिली, लेकिन उनकी कोई सुदृढ़ परम्परा नही बन पायी है। लगता है, पद्य नाटक के रंगमंच के काव्य को स्वीकार करने वाले गद्य नाटकों के रूप में अपनी दिशा ही बदल ली है। कोई प्रतिभा इसे पुनः छन्दोबद्धता की दिशा में ले आ भी सकती है, इसमे सन्देह नही। यह सही है कि उत्कृष्ट एवं शक्तिशाली हिन्दी गद्य नाटक बड़ी संख्या में नहीं लिखे गये हैं, लेकिन उपबलिब्धयों की हमेशा सीमा होती है, सम्भावनाओं की कोई सीमा नही होती।

संदर्भ एवं आधार ग्रंथ :–

1. कल्पांतर : गिरिजा कुमार माथुर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
2. शम्बूक : जगदीश गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद
3. पाषाणी : आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री, निराला निकेतन, मुजफ्फरपुर, बिहार
4. पहचान और परख : डॉ0 मृत्युंजय उपाध्याय, शंकर प्रकाशन, धनबाद

5. अंधायुग : धर्मवीर भारती, किताब महल, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद
6. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृतियाँ : डॉ0 नगेन्द्र गौतम, बुक डिपो, नई दिल्ली
7. आधुनिक कविता : प्रकृति और परिवेश, डॉ0 हरिचरण शर्मा, चिन्मय प्रकाशन, जयपुर
8. संशय की रात : नरेश मेहता, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गॉंधी मार्ग, इलाहाबाद
9. कविता के नये प्रतिमान : डॉ0 नामवर सिंह, राजमहल प्रकाशन, नई दिल्ली
10. तार–सप्तक : स0 अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी
11. आधुनिक नाटक और नाट्य : सं0 कुंवरजी अग्रवाल, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
12. वाल्मीकि रामायण : गीता प्रेस, गोरखपुर
13. साहित्यिक निबंध : लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14. नई कविता : नई आलोचना और कला : भारती भवन, पटना